एपिसोड-47

भारत का ऊर्जा क्षेत्र

OR

ऊर्जा के केंद्र

मुख्य शोध एवं आलेख - डॉ० मानस प्रतिम दास
हिंदी अनुवाद - श्रीमती सविता यादव

(इस कड़ी में भारत का ऊर्जा परिप्रेक्ष्य और पर्यावरण हितैषी हरित ऊर्जा की चर्चा की जाएगी।)

दृश्य

(देर रात्रि का समय.....लगभग 50 घरों की एक बस्ती में नाच-गानों का कार्यक्रम चल रहा है। यहाँ के निवासी आस-पास के क्षेत्रों में कारिगरी और चिनाई का काम करते हैं। ज्यादातर घर कच्चे हैं और बाँस व टीन-शेड से बने हैं। एक दूसरे से सटे होने का कारण बहुत कम धूप यहाँ पहुँच पाती है। हिंदी फिल्मों के गानों पर लोग और कुछ जोड़े डांस कर रहे हैं)

बीजू : हाँ सारी रात.....रात भर ये कार्यक्रम चलेगा। खूब नाचेंगे....खूब गायेंगे।

सुनीता : हँसते हुए। ये सारे पगला गये हैं क्या? इन्हें कल काम पर नहीं जाना? ठेकेदार तो कभी छुट्टी करने से रहा।

संजू : ठेकेदार भाड़ में जाये....हम तो नाचेंगे....गायेंगे....धूम-मचायेंगे।
(सभी लोग हँसते हैं)

लखन : ठेकेदार कैसे समझेगा, हमने क्या पाया है?

बीजू : ग़रीबों का रक्त चूसने वाले क्या समझेंगे? हम तो नाचेंगे।

लखन : हमारे पांच बच्चो ने, अपनी परीक्षा में प्रथम श्रेणी पाई है। क्या हम ये कल्पना पहले कभी कर सकते थे।

सुनीता : गोपाल, अंजु, नैना, कृष्णा और शम्भू ने ये सब कर दिखाया है लखन भाई आप सही कह रहे हैं।

लखन : इन घरों को देखो | क्या ये रहने लायक हैं ? फिर भी हमारे बच्चे दिन-रातमेहनत करते हैं |

रजनी : (वृद्धा की आवाज़) मेरा सौभाग्य, जो इस दिन को देख पाई हूँ |

लखन : मौसी.....आप तो भगवान से दिन-रात, मौत की प्रार्थना करती रहती थीं |

रजनी : ये तो सब भगवान् की इच्छा पर निर्भर करता है | मुझे, अपने बच्चों की सफलता के ये दिन, देखने जो थे |

अंजु : नानी.....एक और व्यक्ति प्रशंसा का पात्र है|

सुनीता : तुम्हारा मतलब - वो वैज्ञानिक भईया |

अंजु : हाँ सुनीता चाची, ठीक कहा | यदि उसने, ये सोलर लैम्प नहीं दिये होते, तो हमारे बच्चे इतना अच्छा नहीं कर पाते |

लखन : अंजु ठीक पकड़ा | वो वैज्ञानिक भईया तो, हमारे लिए अवतार बन कर आयेउनकी मदद बिना, हम अँधेरे से बाहर नहीं आ सकते थे |

बीजू : लखन....तुम्हारा कथन सत्य है | पहले तो, घर में कोई वस्तु तलाश करने के लिए, अन्धेरे में हाथ मारने पड़ते थे |

सुनीता : शुरू में तो, मुझे विश्वास ही नहीं था | ये गुम्बज नुमा पैनल - एक शॉव - पीस - जैसे सजावटी सामान लगता था, जिसका, हमारे लिए कोई लाभ नहीं.....

अंजु : **(हँसते हुए)** वो पंखों वाली सजावटी वस्तु.....चाची, वो पैनल ही तो काम के हैं | जब सूरज की धूप, इन पर पड़ती है तो विद्युत ऊर्जा उत्पन्न होती है |

बीजू : क्या जादू है ?

अंजु : बीजू चाचा, ये कोई जादू नहीं है | ये तकनीकी का कमाल है | दिन के समय, बैट्री में ऊर्जा इकट्ठी होती जाती है | ये वो ही धूप है, जो दिन के समय, छिद्रों से प्रवेश करके, कमरों को रोशन करती है |

सुनीता : इस प्रकार हमें, दिन में भी और, रात्रि के दौरान भी रोशनी प्राप्त होती है| हमारा जीवन तो बदल कर रख दिया है, वैज्ञानिक बाबू ने |

संजू : अब तुम, आगे कहाँ पढ़ने जाओगी - अंजु ? क्या उसी विद्यालय में ?

अजु : नहीं चाचा | इस स्कूल में दसवीं तक कक्षायें लगती हैं | हमें किसी दूसरे विद्यालय में आगे पढ़ने के लिए जाना होगा |

संजू : अच्छा ये बात है | इसके लिए और पैसों की जरुरत होगी | ये भी एक नया सर दर्द |

सुनीता : क्या ये ठेकेदार इसके लिए कुछ मदद कर सकता है | इसके लिए हम, अतिरिक्त समय काम कर सकते हैं | आखिर हमारे बच्चों के भाग्य की जो बात है |

लखन : सुनीता...ये कैसा मजाक है | जो व्यक्ति, हमें समय पर पूरा पैसा नहीं दे सकता है, उससे ये अपेक्षाएँ रखना, उचित नहीं |

सुनीता : परन्तु हमें कोई रास्ता तो तलाशना ही होगा | अब घर चलना चाहिए | लखन, तुम इस आग को बुझाना मत भूलना |

रजनी : हम ध्यान रखेंगे....लखन | याद है पिछले वर्ष, सर्दी के दौरान क्या घटना हुई थी ? किसी ने सुनीता के घर के पास, जलती आग को छोड़ दिया था और कितना भयानक कांड था, वो | यदि, सुनीता ने ध्यान नहीं दिया होता, तो सभी घर जल कर राख़ बन गये होते |

लखन : मुझे याद है | अंजु मुझे पानी का वो बर्तन देना |

रजनी : अरे....ज्यादा पानी व्यर्थ मर करना | पिछले सप्ताह तो पानी आया ही नहीं था |

लखन : बहुत अच्छा | जैसा कह रहे हो, वही करूंगा | आपमें से, कोई रजनी चाची को घर तक छोड़ेगा, नहीं तो उसे यहीं नींद आ जायेगी |

सुनीता : अब चलना चाहिए | कल काम पर जो जाना है |

(दृश्य परिवर्तन)

(TV स्टुडियो.....कार्यक्रम निर्माता मजीद....इधर-उधर गैलरी में टहल रहा है| तान्या अपना मेक-अप करवा रही है | कैमरा और लाइट को अपनी जगह लगाया जा रहा है |)

तान्या : पिछले कार्यक्रम में मेरी आँखों की भंवों के नीचे छाया दिख रही थी | इसको थोड़ा ठीक कीजिये....हाँ....अब ठीक है | बाबुल कहाँ है। मुझे एक और चाय चाहिये |

बाबुल : तान्या मैडम, मैं यहाँ हूँ | मुझे पता है, जब तक आप, दो कप चाय नहीं लेंगी....काम नहीं कर पाएँगी | ये रही आपकी चाय |

चाय डालने का ध्वनि प्रभाव

तान्या : चुप करो गप्पू...अपना काम करो |

बाबुल : और कौन सा काम | निर्माता महोदय को तो मैं, पहले ही तीन कप चाय पिला चुका हूँ | बड़ा विचित्र जीव है (हँसता है) थोड़ी सी देर होने पर ही, उनका पारा चढ़ जाता है |

तान्या : तुम कुछ नहीं समझोगे | सारी जिम्मेदारियाँ उन्हीं पर होती हैं | यदि कार्यक्रम टेलीकास्ट नहीं हो पाता है तो सब कुछ उन्हीं पर आ टिकता है | समझे...

बाबुल : अच्छा मैडम, आज कौन-कौन कलाकार आ रहे हैं | मैंने सुना, सुबीर कुमार साहब पधार रहे हैं |

तान्या : आज के कार्यक्रम में, एक बहुत बड़े वैज्ञानिक पहुँच रहे हैं | कोई फिल्म नहीं.....कोई संगीत नहीं |

बाबुल : वैज्ञानिक कभी आर्टिस्ट बन सकता है | मुझे विश्वास नहीं हो रहा |

तान्या : (चाय की चुस्की लेते हुए) कहाँ मिले थे तुम बाबुल ? क्रिकेट और फिल्मों के अलावा तुझे कुछ पता भी है !

बाबुल : जो तुम्हारे मन में आये, कह सकती हो | परंतु मेरा विश्वास है कि वैज्ञानिक, कुछ नहीं कर सकते |

तान्या : (हँसते हुए) बाबुल - आखिर बात क्या है ? इतना क्रोध...

बाबुल : क्या कहूँ मैडम | दो साल पहले, वो हमारे गाँव में, सोलर पैनल लगा कर गए थे | कह रहे थे गाँव में चौबीसों घंटे मुफ्त में बिजली आएगी| परंतु देखिये....कुछ नहीं, लाइट भी नहीं...क्योंकि कोई पैनल काम ही नहीं कर रहा है |

तान्या : तुम्हारा अभिप्राय है, बिजली पैदा करने वाले पैनल | अवश्य कोई खराबी होगी |

माजिद : तान्या...हमारे वैज्ञानिक शीघ्र ही पहुंचने वाले हैं | क्या तुमने, सभी बिन्दुओं को और सवालों को ध्यान से पढ़ लिया है |

तान्या : आप चिंता ना करें माजिद | मैंने अच्छी तरह से रिहर्सल कर ली है |

माजिद : याद रहे | हमें अपने दर्शकों को सम्पूर्ण जानकारी चित्रण करनी है | आँकड़ों के साथ-साथ, हमें कुछ success stories यानी सफलता की कहानियों के उदाहरण भी पेश करने हैं |

तान्या : ठीक है माजिद | मुझे उनके द्वारा किये गये कार्यों का पूरा ज्ञान है |

माजिद : हाँ, जो लड़ाई परमाणु ऊर्जा उत्पादन पर चल रही है, उसको भी अपनी चर्चामें लेना है | देखो, डॉ० बासु पहुँच गए हैं | स्वागत है... डॉ० बासु |

डॉ० बासु : Sorry माजिद, थोड़ा लेट हो गया | लगता है, सब कुछ, स्टूडियो में तैयार है| क्यों नहीं पहले हम रिकॉर्डिंग कर लें |

तान्या : हेलो सर | मैं तान्या | मुझे ही आपसे भेंटवार्ता करनी है |

डॉ० बासु : हेलो तान्या |

तान्या : मैं ठीक हूँ सर |

डॉ० बासु : परन्तु.....

तान्या : हमारा बाबुल जरुर खुश नहीं है (हँसते हुए) उनके गाँव में, अब भी बिजली नहीं है....हालाँकि सोलर पैनल लगा दिए थे |

डॉ० बासु : बाबुल का क्रोधित होना वाज़िब है | स्वन्त्रता के 70 वर्षों बाद भी, हमारे देश के अनेकों गाँवों में बिजली नहीं पहुँची है |

बाबुल : सर....ये आपकी चाय..

डॉ० बासु : धन्यवाद बाबुल | तुम्हारा गाँव कहाँ पर है ?

बाबुल : सर....मैं आंध्रप्रदेश से हूँ |

माजिद : मैं उन क्षेत्रों में डॉक्यूमेंट्री की शूटिंग के सम्बन्ध में गया हूँ | ज्यादातर सभी गांवों में विद्युत पहुँच गयी है |

डॉ० बासु : सही है | सभी गांवों को, एक ही श्रेणी में नहीं रख सकते हैं | पिछले कुछ वर्षों में बहुत प्रगति हुई है | विश्व की सन 2018 की ऊर्जा रिपोर्ट के अनुसार अब कुछ करोड़ से कम ही लोग बचे हैं जिनके पास विद्युत ऊर्जा की पहुँच नहीं है |

तान्या : हाँ, मैं कुछ सरकारी आँकड़े देख रही थी, जिन्हें कुछ समय पूर्व जारी किया गया था | इसमें कहा गया है कि उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्यप्रदेश, राजस्थान और झारखण्ड के बहुत सारे घरों को विद्युत आपूर्ति की गई है|

डॉ० बासु : श्रीमान मजीद, तुम्हारा संयोजक बहुत होशियार है | उसने अच्छी तैयारी की है | परन्तु तान्या, हमें इससे आगे देखने की आवश्यकता है | कागज़ के आँकड़े और कंप्यूटर से प्राप्त सूचनायें सदैव वास्तविक स्थिति का बखान नहीं कर सकती |

तान्या : सर | आप कहना चाहते हैं कि, बाबुल का उदाहरण हर जगह नहीं मिलेगा| आज स्थितियाँ बदल चुकी हैं |

डॉ० बासु : हाँ, सही कहा है | विद्युतीकरण से हमारी उत्पादन की दर बढ़ती है | इससे मिट्टी के तेल की खपत कम होती है और आर्थिक खुशहाली भी आती है|

माजिद : मेरा मानना है कि धीरे-धीरे केरोसिन की उपयोगिता घट रही है | यह हमारे पर्यावरण के लिए अच्छी बात है |

डॉ० बासु : तुम ठीक कह रहे हो | हमारी सरकारों ने इसके कुप्रभावों को भाँपा है | यदि आप इसका कोई पर्याय, लोगों को नहीं देंगे तो इसकी खपत कम नहीं होगी | इसके लिए रसोई गैस सबसे अधिक कारगर सिद्ध हो सकती है | सन 2017 के अंत तक मिट्टी के तेल की खपत में 20 प्रतिशत तक कमी आयी है |

तान्या : सर | क्या इसे हम प्रतिशत में बता सकते हैं ?

डॉ० बासु : तान्या, तुम्हारे सवाल करने का कोई मुकाबला नहीं | सारे प्रश्न एक ही धारा प्रवाह में, क्या बात है ? मैं, तुम्हें वो सारे आँकड़े बताता हूँ जो तुम्हें चाहिए | 2018 के शुरू में घरों में रसोई गैस कनेक्शन 72% थे, उसके बाद, उसमें आश्चर्यचकित बढ़ोतरी हुई है |

माजिद : सर ! स्टूडियो में चलें | सारी तैयारी पूरी हो चुकी है |

डॉ० बासु : हाँ, मैं तैयार हूँ | चाय से वैसे भी ताजगी आ गयी है | अच्छा चलो |

दृश्य परिवर्तन

(डॉ० बासु के साथी, सभी उस कच्ची बस्ती की ओर चल देते हैं.....जहाँ से हम पहले लौटे थे)

लखन : अरे...वैज्ञानिक बाबू - कैसे हो ? हमें आप बता देते कि आप आ रहे हैं | मैं अपना फ़ोन नम्बर देना भूल गया था |

डॉ० बासु : लखन, तुमने फ़ोन नम्बर दिए थे | परन्तु मैं तुम्हें surprise देना चाहता था |

लखन : क्या आपने गोपाल, अंजू, नैना,कृष्णा और शम्भू की सफलता के बारे में सुना है |

डॉ० बासु : हाँ बिल्कुल | इसीलिये तो मैं यहाँ आये हूँ | मैं उनके लिए कुछ तोहफ़े लाया हूँ | कहाँ हैं वो सभी....

लखन : वोटियूशन के लिए गये हैं | बस आने वाले ही हैं |

(सभी बस्ती वाले इकट्ठा हो जाते हैं और डॉ० बासु के लिए एक स्टूल की व्यवस्था करते हैं)

बीजू : सर आप यहाँ बैठिये | मैं चाय की व्यवस्था करता हूँ |

डॉ० बासु : बीजू, तुम परेशान मत हो | मैंने आधे घन्टे पहले ही चाय पी है | मैं तो बच्चों से मिलने के लिए आया हूँ |

सुनीता : सर | आप देखना चाहेंगे, हमारे घर रोशनी से कैसे चमक रहे हैं | ये सब आपका दिया हुआ है |

डॉ० बासु : (हँसते हुए) सारा श्रेय मुझे मत दो | ये सब एक राष्ट्रीय अभियान के तहत हुआ है और मैं भी उसी का एक अंग हूँ |

संजू : सर...आपका अभिप्राय मिशनरी स्कूल से है | क्या वे आपको सहयोग कर रहे हैं ? मैं समझ सकता हूँ | ये एक बहुत बड़ा स्कूल है |

डॉ० बासु : संजू ये वो मिशनरी स्कूल नहीं है | ये राष्ट्र की एक योजना है | वो देखो....अंजु...गोपाल सारे बच्चे चले आ रहे हैं |

बच्चे : सर...सर | आप कब आये हैं ?

अंजु : आपने हमें पहले क्यों नहीं बताया कि आप आज आने वाले हैं |

डॉ० बासु : O.K. मैं मानता हूँ कि मेरे से गलती हुई है | अच्छा सभी यहाँ आओ | ये गिफ्ट कैसी है ?

सभी बच्चे : गिफ्ट.....वाह ! हमारे लिए

अंजु : महान वैज्ञानिकों की जीवनियाँ | ये मेरे लिए | धन्यवाद सर |

डॉ० बासु : तुम्हें ढ़ेर सारी शुभकामनाएँ |

सुनीता : अंजु....अन्दर आओ और अपनी इस पुस्तक को सही स्थान पर रखो | वैज्ञानिक बाबू...आप किस अभियान की बात कर रहे थे |

डॉ० बासु : ये राष्ट्रीय सोलर अभियान है | इसे सन 2010 में शुरू किया गया था और सूरज की ऊर्जा से 20 गीगाबाइट विद्युत् उत्पादन का लक्ष्य रखा गया था |

बीजू : क्या कहा.....गीगा .....

अंजु : बीजू चाचा, मैं समझाती हूँ | जैसे पानी को लीटर में नापते हैं उसी प्रकार विद्युत ऊर्जा को हम वाट से नापते हैं | गीगाबाइट इसका कई गुणा है | एक सौ करोड़ वाट ही गीगाबाइट है |

डॉ० बासु : इस बस्ती के बच्चे बड़े होनहार हैं | सोलर अभियान कार्यक्रम का उद्धेश्य प्रदूषण पर नियंत्रण पाना है |

संजू : पर्यावरण में बदलाव | आप ठीक कह रहे हो वैज्ञानिक बाबू | पिछले दो सालों से हमारे यहाँ बहुत कम वर्षा हो रही है | मैं समझ सकता हूँ ये सब इसी के कारण हो रहा है |

डॉ० बासु : बीजू | वैज्ञानिक यह कहते हैं कि तुरन्त किसी परिणाम पर नहीं पहुँचो | कुछ वर्षों की असामान्य वर्षा एक साधारण सी घटना कही जा सकती है |

बीजू : परन्तु हमारे गाँव में तो कोई विशेष बदलाव नहीं देखा गया है |

डॉ० बासु : मैं किस प्रकार तुम्हें समझाऊँ | पर्यावरण में बदलाव किसी एक या दो गाँवों तक सीमित नहीं रहता है | ये विश्व-भर को प्रभावित करता है |तुम्हारे लिए वर्षा कम हो सकती है, वहीं दूसरे क्षेत्रों में, अत्यधिक वर्षा हो सकती है | बाढ़ आ सकती है और अत्यधिक तूफ़ान और चक्रवात कीघटनायें हो सकती हैं |

बीजू : परन्तु हमारा गाँव .....

अंजु : चाचा | पर्यावरण में बदलाव कई वर्षों बाद होते हैं | परन्तु अब हम उसे महसूस कर सकते हैं | वैज्ञानिक बाबू ये नहीं कह रहे हैं कि कम वर्षा का होना इसके साथ सम्बन्ध नहीं रखता है | परन्तु इस प्रकार की परिस्थितियों का अनुमान कई वर्षों के अध्ययन के बाद लगाया जा सकता है |

डॉ० बासु : अंजु तुम सही कह रही हो | हमारे सोलर मिशन का उद्धेश्य ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन को कम करना है | इससे पृथ्वी के वातावरण का तापमान नहीं बढ़ेगा और सामान्य बना रहेगा |

सुनीता : जो सोलर लाइटें हमें दी गई हैं, उससे, किसी प्रकार की गैसों का उत्सर्जन नहीं होता है | मैं आपका अभिप्राय समझ पा रही हूँ |

डॉ० बासु : बहुत ठीक | 2015 के केंद्रीय बजट में इसके उत्पादन का लक्ष्य बढ़ाकर 100 गीगाबाइट कर दिया गया था | इसको हमें सन 2022 तक प्राप्त करना है |

अंजु : वैज्ञानिक बाबू, ऐसा नहीं लगता, ये बहुत बड़ा लक्ष्य है, जिसे हमें प्राप्त करना है | हाँलांकि हम सब इसके पक्ष में हैं, परन्तु क्या इसे प्राप्त किया जा सकेगा |

डॉ० बासु : अंजु तुम्हारे तर्क बड़े शानदार हैं | क्या बात है | हाँलांकि यह एक बड़ा लक्ष्य है, जिसे हमको प्राप्त करना है | वैसे भी गैर-पारंपरिक ऊर्जा स्त्रोतों के अलावा हमारे पास कोई चारा नहीं बचा है | सोलर ऊर्जा उत्पादन के क्षेत्र में, हमको नम्बर एक राष्ट्र बनना है, तो ये करना ही होगा |

रजनी का प्रवेश##

रजनी : वैज्ञानिक बाबू, मेरे लिए चलना थोड़ा मुश्किल है | बुढ़ापे का जो तकाजा ठहरा | परन्तु आप आये हुए हैं, इसीलिये मैं यहाँ चली आई |

डॉ० बासु : ओह ! आपने क्यों तकलीफ उठाई | मुझे बता देते, मैं ही चला आता |

रजनी : आप आगे कभी चले आना, मैं तुम्हारे लिए थोड़ा दूध लाई हूँ | ना मत करना | हम गरीब हैं, परन्तु बिना कुछ पिये जाने नहीं देंगे |

अंजु : माताजी वो तो सब ठीक है | पर ये तकलीफ क्यों उठाई |

रजनी : बाकी बातें बाद में, पहले ये दूध पिओ | धीरे-धीरे मेरी आँखों की रोशनी भी कम हो रही है |

अंजु : (हंसती हुई) सर | रजनी दादी चाहती हैं, आप उसकी भरपूर प्रशंसा करो | बहुत अच्छा कहने से काम नहीं चलेगा |

रजनी : देखो....ये छोटी क्या बोल रही है ? इसे सदा ही शरारत सूझती है |

(सभी हँसते हैं)

अंजु : हाँ वैज्ञानिक बाबू...मैं समाचार देख रही थी | बाहर एक दूकान पर, और पता है, वो एक कोयले की खदान की बातें कर रहे थे | मेघालय के एक क्षेत्र में 15 खान-मजदूर फंसे हुए हैं | वो इसे चूहों से जोड़ कर बता रहे थे | मैं कुछ समझी नहीं, वो सारा, क्या माजरा है | ये जयंती-पहाड़ियों में हो रही, कोयले की गैर-कानूनी खुदाई से सम्बंधित है |

डॉ० बासु : ये एक बहुत ही संकरी खदान की कहानी है, जिसे चूहा...खदान कहा जाता है | इन खदानों का प्रवेश द्वार बहुत ही कम चौड़ा होता है | अन्दर प्रवेश करने पर चारों ओर अँधेरा ही अँधेरा | रोशनी अन्दर जा ही नहीं सकती है | एक ऐसी ही खदान में 15 मजदूर फंसे हुए हैं | **जिन्हें बाहर निकालने के सभी पर्याय असफल रहे हैं |**

(रजनी दादी- उदास होकर प्रार्थना करने लगी)

डॉ0बासु : अम्मा आप ठीक तो हैं | सुनीता तुम इन्हें अंदर ले जाओ, जिससे वो आराम कर सकें |

सुनीता : वैज्ञानिक बाबू चिंता मर करो | आज रजनी अम्मा के बेटे का जन्म दिन है |

डॉ0बासु : वो... ये बात है | बहुत अच्छा - कहाँ हैं इनके बेटे ? मुझे समझ में आया | अम्मा के दूध का स्वाद कितना अच्छा है ? क्या आपका बेटा कहीं बाहर काम करता है ? अच्छा, उसकी याद जो आ रही है |

(रजनी चाची चिल्लाती है)

डॉ0बासु : माताजी, मुझसे कोई गलती हुई है क्या ?

संजु : वैज्ञानिक बाबू ये आपकी गलती नहीं है | हम गरीब मजदूरों की कहानी ही पीड़ादायक है | क्या कर सकते हैं ?

डॉ0बासु : मैं.....मैं कुछ समझा नहीं |

अंजु : मैं समझाती हूँ सर | रजनी दादी का एक ही बेटा था जो काम करने के लिए दक्षिण में गया था | एक दिन जब वह काम कर आया था तो अपने तीन साथियों के साथ, उस कोयले की खदान में दफन हो गया | बस फिर क्या था (रोने लगती है) |

डॉ0बासु : मैं समझा.....

बीजू : रजनी चाची के पति की भी उस शोक से मृत्यु हो गई | अपने बेटे की मृत्यु का समाचार सुनते ही, हृदयघात से उनकी मृत्यु हो गई |

डॉ0बासु : रजनी अम्मा के दूसरे बेटे क्या करते हैं ?

सुनीता : उनकी दो बेटियाँ हैं | सभी एक फैक्ट्री पर काम करती हैं | हमारी तरह वो भी मजदूरी करती हैं, यहाँ से कोई पाँच किलोमीटर दूर है |

डॉ0बासु : मुझे समझ में नहीं आ रहा, मैं अम्मा को कैसे सांत्वना दूँ |

अंजु : वैज्ञानिक बाबू, कोयला हमें बहुत महँगा पड़ता है | जिंदगियाँ ले लेता है |

डॉ0बासु : मैं तुम लोगों की पीड़ा समझ सकता हूँ | ये सभी गम्भीर मुद्दे हैं, जिनका समाधान जरूरी है | इसे नकार नहीं सकते हैं | यहाँ तक की तुम्हारी भवन निर्माण के क्षेत्रों में भी खतरे हैं |

संजू : वैज्ञानिक बाबू | हम से अच्छा कौन जान सकते हैं इन खतरों को |

डॉ0बासु : परन्तु खदानों के अपने खतरे हैं | हालाँकि खान मजदूरों के सुरक्षा के लिए क़ानून बने हुए हैं | परन्तु खदानों के मालिक इन पर ध्यान ही नहीं देते |

डॉ0बासु : मैं लेट हो रहा हूँ | अब मुझे चलना चाहिये | आप लोगों को दुःखी देखकर मुझे अच्छा नहीं लग रहा है | एक दिन आयेगा, जब हमेंकोयले से मुक्ति मिलेगी और ऊर्जा की सारी जरूरतें सौर ऊर्जा से ही पूरी हो सकेंगी | हमारे कोई भी मजदूर भाई - कोयले की खदानों में अपनीजान नहीं देंगे | ये आश्चर्य सा लगता है परन्तु वो दिन अभी दूर नहीं हैं | अच्छा आप सभी को नमस्कार | Good Bye.

समापन संगीत